Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

रामदरश मिश्र के काव्य में रस योजना

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

रामदरश मिश्र के काव्य में रस योजना

Dr. Manju Sharma

Asst. Prof. Hindi, Set Banarasi Das College of Education, Kurukshetra, Haryana, India

----------♦----------

कवि, कथाकार मिश्र जी का जन्म श्रावण पूर्णिमा 15 अगस्त, सन् 1924 में गाँव डुमरी जनपद गोरखपुर में हुआ। उन्होंने काव्य, उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबन्ध आदि सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई है। मिश्र जी की काव्य के प्रति विशेष रुचि रही है। पथ के गीत ;1951द्ध, बैरंग–बेनाम चिट्ठियाँ ;1962द्ध, पक गई है धूप;1969द्ध, कंधे पर सूरज ;1977द्ध, दिन एक नदी बन गया ;1984द्ध, मेरे प्रिय गीत;1985द्ध, बाजार को निकले हैं लोग ;गज़लद्ध ;1986द्ध, जुलूस कहाँ जा रहा है?;1989द्ध, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि रचनाएँ ;1990द्ध, आग कुछ नहीं बोलती ;1992द्ध, शब्द सेतु ;1994द्ध, बारिश में भीगते बच्चे ;1996द्ध, ऐसे में पिफर कभी ;1999द्ध इत्यादि उनकी प्रमुख काव्य कृतियां हैं, जिनमें रस योजना के विविध रूप शामिल हैं।

रामदरश मिश्र के काव्य में रस योजना

फरस्यते इति रसः य–आस्वादन जन्य आनन्द को रस कहते हैं। आस्वादन एक प्रकार के अलौकिक आनन्द से भिन्न है। वस्तुगत आनन्द की अनुभूति ही रस कहलाती है। अतः काव्यानन्द अलौकिक अनुभूति के कारण अनिर्वचनीय तत्त्व बनकर रस रूप में प्रकट हो जाता है। काव्यरस लौकिक रस से इसलिए महान् होता है, क्योंकि लौकिक रस में अमरता और परमानंद की प्राप्ति नहीं होती परन्तु काव्यानंद में ये सब तत्त्व निहित हैं। लौकिक रस क्षणिक तथा काव्यानंद चिरस्थायी प्रभाव उत्पन्न करता है।

रस के संबंध में अक्सर यह प्रश्न उठता है कि क्या रस केवल सुखात्मक ही होता है। अथवा सुखात्मक तथा दुखात्मक दोनों प्रकार का है। यह विषय विवादास्पद रहा है। इस विषय को लेकर आचार्यों के दो वर्ग बन गए हैं। एक वर्ग तो वह है जो रस को एकान्त सुखात्मक नहीं मानता। इसके विपरीत दूसरा वर्ग इसे सर्वथा सुखात्मक ही स्वीकार करता है।

1. सुखात्मक : शृंगार, वीर, हास्य, अद्भुत और शान्त

2. दुखात्मक : करुण, रौद्र, वीभत्स और भयानक।

'रस सि(ान्त' भारतीय काव्य शास्त्रा का प्रमुख सि(ान्त है। वीर, शृंगार, करुण, रौद्र, वीभत्स, शान्त, अद्भुत, भयानक, हास्य, वात्सल्य और भक्ति ग्यारह रस माने जाते हैं। रामदरश मिश्र जी ने अपने काव्य में इन रसों का सकुशल प्रयोग किया है। मिश्र जी के काव्य में रसों का स्वाभाविक प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

मिश्र जी के काव्य में शृंगार रस :

फजागो री प्रिय।

खुल गए अंग गोरे–गोरे
अंगड़ाई ली, बह उठी हवा

आँखों के दर्पण में।य ;बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ–पृ. 149द्ध

'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ' से ली गई ये पंक्तियाँ शृंगार रस का सुन्दर उदाहरण है। शृंगार रस दो शब्दों के योग से बना है–शृंग तथा आर। काम की उत्पत्ति तथा उद्रेक को शृंग कहते हैं तथा आर का अर्थ गमन करना है। प्रेमियों के मन में संस्कार रूप से वर्तमान रति या प्रेम रसावस्था को पहुँचकर जब आस्वाद योग्यता प्राप्त करता है तब उसे शृंगार रस कहते हैं। 'रति' नामक स्थाईभाव ही विभाव, अनुभाव, संचारी भाव में व्यक्त होता है व शृंगार रस को प्राप्त होता है। इस पर रस के विभाव–आलम्बन ;नायक–नायिकाद्ध उद्दीपन ;एकान्त, वन–बाग, सखी–सखा आदिद्ध अनुभाव–हावभाव आश्रयगत चेष्टाएँ मुस्कान आदि संचारी भाव–उन्माद, लज्जा आदि होते हैं। इस रस के दो भेद हैं ;1द्ध संयोग ;2द्ध विप्रलम्भ।

संयोग शृंगार रस योजना :

जहाँ नायक नायिका की संयोग अवस्था का चित्राण होता है वहाँ संयोग शृंगार रस होता है। इसमें प्रेमिका सावन के महीने में अपने प्रेमी से मिलकर इस प्रकार के भाव व्यक्त करती है–

फरेशम स्वर से बाँध रहा प्राणों को कोई प्यार मधुर

यौवन का अंचल थाम रहा कोई तन्द्रिल आधर मधुर

लपटों में नित जलता–जलता हारा–सा आज रूका जीवन

मिल रहा किसी परदेशी को अपना भूला संसार मधुर।य1

इस पद में प्रेमिका वियोग के बाद अपने प्रेमी से सावन में मिलने वाली है और मन में 'रति' नामक भावों की उत्पत्ति हुई है।

वियोग शृंगार रस–योजना

एक दूसरे के प्रेम में अनुरक्त नायक एवं नायिका के समागम के अभाव से वियोग शृंगार रस की उत्पत्ति होती है।

फतुम बिन कुछ खोया–खोया सा

कुछ सूना–सूना सा लगता है।

रीते घर का हर रीतापन

कुछ दूना–दूना लगता है।य्2

मिश्र के काव्य में करुण रस–योजना :

प्रिय के मरण, अनिष्ठ की आशंका, इष्ट वस्तु की हानि आदि से जहाँ शोक का भाव परिपुष्ट होता है तथा किसी प्रकार दुःख देखकर मन में करुण भाव जागृत हो तो वहाँ पर करुण रस की उत्पत्ति होती है।

फ्पफटी–पफटी आँखों में लादे भूख डरानी

बैठे होंगे खाली घर के सभी परानी

लेकर सबका दर्द आपकी नगरी में भरमाये हैं।य्3

;हम पूरब से आये हैंद्ध

इस पद में गरीबी को दर्शाया गया है। लोग भूख से मरे जा रहे हैं। इस पद में करुण रस है।

मिश्र जी के काव्य में रौद्र रस योजना :

जहाँ विपक्ष की ओर से अपनी अथवा गुरुजन आदि की निन्दा तथा विरोध के प्रतिशोध रूप में क्रोध का भाव उत्पन्न होता है। वहाँ रौद्र रस होता है। मिश्र जी के काव्य से लिए गए रौद्र रस के उदाहरण निम्नलिखित हैं–

फविज्ञान परमाणु बम सजा रहा है

और ध्र्म सम्प्रदाय का इन्द्रजाल

राजनीति मुस्करा कर

कभी उसे देखती है, कभी उसे।य्4

मिश्र जी के काव्य में वीर रस योजना :

शत्रु का उत्कर्ष तथा उसकी ललकार आदि से किसी व्यक्ति के हृदय में उसको मिटाने के लिए जो उत्साह उत्पन्न होता है, उसे वीररस कहते हैं या कोई बात वीरता पूर्ण कही जाये जिसमें उत्साह उत्पन्न हो वहाँ पर वीर रस होता है। जिस विषय में उत्साह का संचार हो अर्थात् उत्साह भाव परिपुष्ट हो वहाँ वीर रस होता है। रामदरश मिश्र के काव्य के लिए गए वीर रस के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

फ्पफट जाती बन्ध्न की घड़ियाँ क्रान्ति उदय होती है

जब यौवन जीवन पथ पर तूपफान लिए आता है।य्5

मिश्र जी के काव्य में भयानक रस योजना :

किसी भयदायक वस्तु का वर्णन सुनने, देखने अथवा किसी भयभीत व्यक्ति की चेष्टा आदि के उल्लेख से जिस रस की उत्पत्ति होती है। उसे भयानक रस कहते हैं। रामदरश मिश्र जी के काव्य से लिए गए भयानक रस के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

फ्सदियों का पुराना

तोम तम का यह भयंकर

अनगिणत बाए हुए मुख

निगल जाना चाहता है।य्6

मिश्र जी के काव्य में वीभत्स रस–योजना :

घृणित वस्तुओं के पढ़ने, सुनने अथवा उनके देखने से जो ग्लानि उत्पन्न होती है, उसे वीभत्स रस कहते हैं। मिश्र जी के काव्य में वीभत्स रस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

फ्लूटते हो आबरू की आब चाँदी के करों से

प्यार को बन्दी बनाया नग्न भूखी वासना ने।य्7

इन पंक्तियों में भूखी वासना के प्रति ग्लानि भाव प्रदर्शित किए गए हैं। अतः यहाँ पर वीभत्स रस योजना है।

फ्खंभ के ये पैर पत्थर से बनी मजबूत बाहें

छीन कर टुकड़े मनुज के

लील जाती श्वान सी है

झपटती है सड़े मुरदों पर

परस्पर जूझती हैं।य्8

मिश्र जी के काव्य में अद्भुत रस योजना :

विचित्रा अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर हृदय में विस्मित आदि भाव उठते हैं, उन्हें अद्भुत रस कहते हैं। मिश्र जी के काव्य से ही लिए गए अद्भुत रस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

फ्यह महानगर सोया है भीषण का अजगर–सा

इस खामोशी में भी है कितनी चहल–पहल

जड़ता में भी अद्भुत हलचल

ज्यों आग काठ में रही मचल।य्9

मिश्र जी के काव्य में शान्त–रस योजना :

संसार में अत्यन्त निर्वेद होने पर या तत्त्व ज्ञान द्वारा वैराग्य का उत्कर्ष होने पर शान्त रस की प्रतीति होती है। रामदरश मिश्र जी के काव्य में प्रयुक्त शान्त रस के उदाहरण निम्नलिखित है –

फ्वास्तव में यह ब्रह्म हैं

जो शून्य होकर भी तीनों जहान है

बुंद्ध

आपकी तरह आपका दर्पण भी महान् है।य्10

www.ignited.in

मिश्र जी के काव्य में भक्ति रस योजना :

'सा पुरानुरक्तिईश्वरे' भगवान में परम अनुरक्ति ही भक्ति है। जहाँ ईश्वर प्रेम विभाव आदि से परिपुष्ट हो जाता है। वहाँ भक्ति रस की उत्पत्ति होती है। आचार्य भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्रा में प्रारम्भ में केवल नौ रसों का ही विवेचन किया है, किन्तु बाद के आचार्यों ने दो रस और माने हैं। अतः उन्होंने रस परिगणना में दो रसों को और गिन लिया है–भक्ति रस और वात्सल्य रस।

फ्और पहले के गिरते ही उस हिलते हुए आसन पर

खुद बैठ जाता है

कभी गीता का श्लोक

कभी रामायण की चौपाई

कभी 'वैष्णव जन तो रे कहिए

गाते हुए।य11

इन पंक्तियों में दर्शाया गया है कि मनुष्य आसन पर बैठकर कभी गीता का श्लोक, कभी रामायण की चौपाई का गान कर रहा है। भगवान का गान करने से मन में भक्ति के भाव उजागर होते हैं। अतः यहाँ पर भक्ति रस है।

मिश्र जी के काव्य में वात्सल्य रस योजना :

प्राचीन आचार्यों ने वात्सल्य रस को रस की श्रेणी में नहीं रखा है। सोमेश्वर के अनुसार स्नेह, भक्ति, वत्सल रति के ही विशेषरूप हैं। अनेक आचार्यों ने वात्सल्य रस को माना है और रसों में इसकी गणना की है।

वत्स, पुत्राादि के विषय में रति को वात्सल्य कहते हैं, जहाँ इस प्रकार का वात्सल्य भाव विभावादि से परिपक्व होकर रस की स्थिति में पहुंचता है, वहाँ वात्सल्य रस होता है। रामदरश मिश्र जी के काव्य से लिए गए वात्सल्य रस के कुछ उदाहरण कुछ इस प्रकार हैं–

फ्धरती माँ

तुमने हमारे लिए वात्सल्य का हरा–भरा आँचल पफैलाये रखा

जिसके नीचे दूध की तरह बहता रहा

पूफलों का खिलखिलाता झरना।य12

मिश्र जी के काव्य में हास्य रस योजना :

विकृत वेश–भूषा, वाणी चेष्टा आदि देखकर हृदय में जो विनोद का भाव उत्पन्न होता है। वह हास कहा जाता है। वही विभाव, अनुभाव, संचारी से पुष्ट होकर 'हास्य रस' में परिणित हो जाता है। रामदरश मिश्र जी के काव्य से लिए गए हास्य रस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

फ्धनपति कुबेर आज गुरुकुल के राजा

गुरुकुल आचार्य श्री बृहस्पति स्तुति करते हैं बजा–बजा

बाजा

कामदेव मेनका पढ़ाते आचार शास्त्रा

पाठ दुहराते हैं ट्टषि कन्यायें

आ जा सनम आजा।य13

संदर्भ सूची :

1. डॉ॰ रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पथ के गीत, पृ. 21

2. वही, दिन एक नदी बन गया, पृ. 462

3. वही, बैरंग बेनाम चिट्ियाँ, पृ. 227

4. डॉ॰ रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, हंसी ओंठ पर आंखें नम हैं, पृ. 334

5. डॉ॰ रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पथ के गीत, पृ. 84

6. वही, पथ के गीत, पृ. 56

7. वही, मेरे गीत, पृ. 27

8. वही, पथ के गीत ;भाग–1द्ध, पृ. 57

9. वही, बैरंग बेनाम चिट्ठियां, पृ. 145

10. डॉ॰ रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, बारिश में भीगते बच्चे, पृ. 163

11. डॉ॰ रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पथ के गीत, पृ. 11

12. डॉ॰ रामदरश मिश्र, रामदरश मिश्र रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, जुलूस कहां जा रहा है, पृ. 13

13. वही, आग कुछ नहीं बोलती, पृ. 143